Exam.Code:0008
Sub. Code: 0661

2071
B.A./B.Sc. (Hons.) Fourth Semester
Sanskrit
Paper - II [Opt. (ii)]: Kalidas

Time allowed: 3 Hours | Max. Marks: 90

x-x-x

नोटः सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न 1: किन्हीं दो प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखें :- (2x15)

क) शाकुन्तलम् नाटक के नायक दुष्यन्त का चरित्र-चित्रण कीजिए?

ख) अभिज्ञान-शाकुन्तलम् नाटक के विशेष सन्दर्भ में कालिदास द्वारा वर्णित प्रेम, एवं सौन्दर्य का वर्णन कीजिए?

ग) कालिदास का काल निर्धारित करते हुए उनकी नाट्यकला का मूल्यांकन कीजिए?

घ) अभिज्ञान-शाकुन्तलम् नाटक के आधार पर विदूषक का चरित्र-चित्रण कीजिए?

प्रश्न 2: निम्नलिखित श्लोकों में से किन्ही चार श्लोकों का सप्रसंग अनुवाद कीजिए :- (4x10)

क) अधरः किसलय-रागः कोमल-विटपानुकारिणी बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्।।

ख) अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कर-रुहै-रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादित-रसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।

ग) सायंतने सवन-कर्मणि संप्रवृत्ते वेदीं हुताशनवतीं परितः प्रयस्ताः।
छायाश्चरन्ति बहुधा भयमादधानाः संध्याभ्र-कूट-कपिशाः पिशिताशनानाम्।।

घ) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया कण्ठः स्तम्भित-वाष्प-वृत्ति-कलुषश्चिन्ता-जडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया-विश्लेष-दुःखैर्नवैः।।

ङ) भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः नवाम्बुभिः भूरिविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वाभाव एवैष परोपकारिणाम्।।

च) स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु, क्लिष्टं नु तावत्फलमेव पुण्यम्।
असंनिवृत्त्यै तदतीतमेते मनोरथा नाम तटप्रपाताः।।

प्रश्न 3: निम्नलिखित में से किन्हीं दो सूक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (2x10)

क) न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।

ख) अर्थो हि कन्या परकीय एव।

ग) उपयन्तुः हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी।

x-x-x